Chapter 38

अदादिगण अजन्त धातुएँ

उतो वृद्धिर्लुकि हलि ।

लुग्विषये उतो वृद्धिः पिति हलादौ सार्वधातुके न त्वभ्यस्तस्य । यौति, युतः, युवन्ति । यौषि, युथः, युथ । यौमि, युवः, युमः । युयाव । यविता । यविष्यति, यौतु, युतात् । अयौत् । अयुताम् । अयुवन् । युयात् । इह उतो वृद्धिर्न, भाष्ये पिच्च ङिन्न, ङिच्च पिन्न इति व्याख्यानात् । युयाताम् । युयुः । यूयात् । यूयास्ताम् । यूयासुः । अयावीत् । अयाविष्यत् । या प्रापणे । याति । यातः । यान्ति । ययौ । याता । यास्यति । यातु । अयात् । अयाताम् ।

लुक् के विषय में हलादि पित्

सार्वधातुक - तिप्, सिप् और मिप् - के परे होने पर अङ्ग के उकार के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है किन्तु अभ्यस्त अङ्ग के उकार के स्थान पर वृद्धि नहीं होती। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह वृद्धि-आदेश अन्त्य उकार के ही स्थान पर होता है। उदाहरण के लिए 'यु' धातु से लट् लकार में प्रथमपुरुष - एकवचन की विवक्षा में 'तिप्' और शप् लुक् होकर 'यु ति' रूप बनता है। यहाँ लुक् विषय में पित् सार्वधातुक - तिप् (ति) परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'यु' के उकार के स्थान पर वृद्धि - औकार होकर 'य् औ ति = यौति' रूप सिद्ध होता है।

लङः शाकटायनस्यैव।

आदन्तात् परस्य लङो झेर्जुस् वा स्यात्। अयुः, अयान्। यायात्। यायाताम्। यायुः। यायात्। यायास्ताम्। यायासुः। अयासीत्। अयास्यत्। वा गतिगन्धनयोः। भा दीप्तौ। ष्णा शौचे। श्रा पाके। द्रा कुत्सायां गतौ। प्सा भक्षणे। रा दाने। ला आदाने। दाप् लवने। पा रक्षणे। ख्या प्रकथने। अयं सार्वधातुके एव प्रयोक्तव्यः। विद ज्ञाने।

आकारान्त धातु से परे लङ् के 'झि' के स्थान पर 'जुस्' आदेश शाकटायन के मतानुसार होता है। 'अनेकाल्शित्सर्वस्य' परिभाषा से यह आदेश सम्पूर्ण 'झि' के स्थान पर होगा। पाणिनी का मत न होने के कारण यह आदेश विकल्प से होता है। उदाहरण के लिए 'या' धातु से लङ् लकार में प्रथमपुरुष-बहुवचन की विवक्षा में 'झि', शप्, लुक् और अट् होकर 'अ या झि' रूप बनता है। इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से आकारान्त धातु से 'या' से परे लुङ् के झि के स्थान पर 'जुस्' होकर 'अ या जुस्' रूप बनेगा। यहाँ जकार-लोप, पर-रूप और रुत्व-विसर्ग होकर 'अयुः' रूप सिद्ध होता है। विकल्पावस्था में 'झि' के झकार के स्थान पर अन्तादेश, इकार-तकार-लोप और सवर्णदीर्घ होकर 'अयान्' रूप बनता है।